उत्तर आधुनिकतावाद में प्रतिवाद इतिहास लेखन की नई विधा–एक अध्ययन

*डॉ. ताराचन्द बैरवा
**डॉ. विरेन्द्र सिंह चौधरी

इतिहासकार द्वारा अतीत का पुनर्निर्माण इतिहास है। जो दस्तावेज या अवशेष अतीत छोड़ता है, वे इस पुनर्निर्माण के लिए इतिहासकार की सामग्री प्रमुख है। उसके द्वारा स्थापित तथ्यों के लिए वे साक्ष्य का काम करते हैं। इन अभिलेखों के विविध रुप होते हैं। भवन, भित्ति लेख या शिलालेख या अन्य उत्कीर्ण सामग्री, पदक, सिक्के, इति वृत्तांत, यात्रा वृत्तांत, राजाज्ञाएं, संधियां, शासकीय पत्राचार, निजी पत्र एवं डायरियां। अभिलेख–रुपी इस इतिहास के अध्ययन से ही इतिहासकार घटना–रुपी इतिहास का ज्ञान प्राप्त करता है। इतिहास साक्षयों से निपटता है। इसलिए कहा गया है, ''अभिलेख नही तो इतिहास नहीं।''

1980 के दशक में प्रतिवाद (प्रतिरोध) का इतिहास लेखन की नई विधा भारत में शुरु हुई। मार्क्सवादी इतिहास कारों का एक समुदाय जो पुरातनपंथी सिद्धान्तों के घोर आलोचक रहें, उन्होंने इस अवधारणा को आगे बढाने में सकारात्मक प्रयास करना शुरु किया। उन्होनें सामान्यजन के इतिहास लेखन में एक समन्वयावत्मक, प्रगतिशील अवधारणा के साथ 1960 से 1970 के बीच लेखन में नीचे से इतिहास लेखन कार्य को प्रांरभ किया। हॉलाकि 1970 के अन्त में इस क्षेत्र में इंग्लैण्ड में प्रसंशनीय कार्य शुरु हुआ। परिणामस्वरुप समाज, इतिहास एवं संस्कृति में अनगनित शोध कार्य होना प्रारंभ हुआ। बाद में इंग्लैण्ड मं प्रसिद्ध इतिहासकार "E.P. Thompson" ने अपनी पुस्तक (The making of the English working class, the evolving women's history) में प्रतिवाद का इतिहास लेखन कार्य किया। भारतीय एवं अंग्रेजी इतिहासकारों ने संयुक्त रुप से चर्चा करके 'Subaltern study project पर कार्य करना शुरु किया। भारत में 'अधीनस्थ' का इतिहास लेखन का ठोस कार्य रणजीत गुहा ने 1982 से 1989 के बीच किया। वे इस कार्य के मुख्य सूत्रधार थे। इस संदर्भ में उनके 6 Volume और 15 पुस्तके प्रकाशित हूई। इस कार्य से लेटिन अमेरिकन **Study group** भी प्रभावित हुआ, और विभिन्न विषयों में जैसे, राष्ट्रीयता, श्रम, लिंग (Gender) और सांस्कृतिक मुद्धों पर कार्य हुआ। BURTON STEIN जो प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार थे, उन्होंने 1980 में इस कार्य की सराहना की। अधीनस्थर का इतिहास शैक्षणिक जगत प्रवेश ही इस कारण हुआ कि निम्न वर्ग को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की जाए।

इतिहास मनुष्य की अपने परिवेश और साथी मनुष्यों के साथ, परस्पर क्रीड़ा का नतीजा है। साधारण शब्दों में, इतिहास मनुष्य का जीवित अतीत है। यह शताब्दियों के दौरान मनुष्य द्वारा अपने अतीत की पुर्ननिर्मित, वर्णित, और व्याख्यायित करने का प्रयास है। इतिहास–लेख ऐतिहासिक लेखन में विकास क्रम की कथा कहता है। इतिहास के लेखन से सम्बन्धित बदलते विचारों और तकनीकों तथा स्वयं इतिहास के प्रति बदलते रुख भी शामिल हो गए है। अतः यह मनुष्य के अतीत बोध के विकास का अध्ययन है।[1]

Post Modernism उत्तर आधुनिकवाद के बारे में Modern day dictionary received ideas कहती हैः ''इस शब्द का कोई अर्थ नहीं है। चाहे कितनी बार इसका प्रयोग करों।[2] आधुनिकोत्तरवाद, विचारों और विषयों का एक भटकाव है। इस विचारधारा को समय की पहचान के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता। आरनगेरे स्पष्ट करते है कि आधुनिकोत्तरवाद् दशा आधुनिकता में विश्वास की कमी दर्शाती है कि ये ही वे परिस्थितियां है जो मानवता को स्व. विध्वंस की और धकेल रही है, वह एक विशेष परिस्थिति है जिसमें सम्पूर्ण आधुनिक सभ्यता की स्वयं के प्रति समालोचनात्मक दृष्टिकोण रखने को मजबूर किया जा रहा है।[3]

आधुनिकोत्तरवाद की मुख्य सैद्धान्तिक देन है, इसका सकारात्मकवाद पर गहरा आधात। एक प्रयोगसिद्ध सामाजिक विज्ञान की संभावना को खुला रखते हुए जिसमें सकारात्मक की कल्पनाएं न हो। समालोचक लारेंस स्टोन स्वीकार करते है कि 'भाषायी बदलाव' ने हमें सिखाया कि पुस्तकों का परीक्षण पहले से अधिक दक्षता, और सावधानी से करने की जरुरत है। नए औजारों का प्रयोग करते हुए गुप्त व नीचे छुपे प्रत्यक्ष संवादों को प्रकट करना है।[4] आधुनिककोत्तरवाद मसीहा हवांस लिखते है कि आधुनिककोत्तरवादी सिद्धान्त ने इतिहासकारों को–दस्तावेजों को अधिक सूक्ष्मता से और लेखों को नए तरीकों से देखने, और स्वयं विश्लेषी अधिक होने और यर्थाथता के प्रति अधिक सवेंदनशील होने के लिए बाध्य किया है। इसने कई नए क्षेत्रें को खोला है नए विषय खेज हेतु प्रस्तुत किए है। इसने व्यक्तिगत तौर पर मानव को इतिहास में स्थान दिया है, जबकि पूर्ववर्ती विज्ञानों ने उन्हें हटा दिया था। इसने इतिहास लेखन के केन्द्र ऐतिहासिक लेखन पर जोर से साहित्यिक विद्या पर कर दिया

है जिसने इतिहास को विश्वविद्यालयों से बाहर भी जनता के पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाया है और इसने कई अग्रणी ऐतिहासिक कार्यो को प्रोत्साहित किया है या उन्हें सूचित किया है, यह सब दशक के अन्त या अधिक में हुआ है''[5]

उत्तर आधुनिकतावाद् में अवर इतिहास–लेखन कार्य की शुरुआत हुई है। सबॉल्र्टन शब्द ऐटोनियों ग्राम्शी के पांडुलिपी लेखनों से लिया गया है। जिसका अर्थ निकृष्ट या निम्न श्रेणी का चाहे यह वर्ग, जाति, वय, लिंग, या पद किसी भी दृष्टि से हो वास्तव में Post modernism में subelten studies वह है तो इतिहास लेख में अब तक उपेक्षित रहे है। उन्हें अनेक विषयों से जोड़कर देखा जाता है जो कालिक परिपेक्ष्य में मुगलकाल से 1970 के दशक तक तथा विषयवस्तु की दृष्टि से सम्प्रदायवाद से औधोगिक श्रम तक विस्तीर्ण है, शैली में वर्णनात्मक से अवधारणात्मक तक एक व्यापक विविधता दर्शाते है।[6]

सबॉल्र्टन या अवर गतिविधि का एक विशिष्ट पक्ष इसका श्रम अभिमुखन है जिस कारण सबॉल्टन, स्टडीज अपने तेवर, आधार वाक्य (कोटियों) और विश्लेषण में मार्क्सवादी है। किसान, कारखाने में कार्यरत मजदूर और जनजातीय लोग या आदिवासी समय–समय पर संघटित सत्ता प्रणाली के विरुद्ध विद्रोहों के रुप में उनकी व्यथाओं तथा घनीभूत आक्रोशों की अभिव्यक्ति–सबॉल्टन इतिहास लेखक मूलतत्व तथा प्रयोजन है। गुहा स्पष्ट शब्दों में कहते है कि किसान कभी नहीं लड़खड़ाया और न ही विप्लव के बहाव में बहाव में बहा। उसने सजगता के विद्रोह का रास्ता अपनाया सब उसे यह लगा कि उसके द्वारा किए गए सारे अनुरोध विफल हो गए है। बलवा चाहे कारखाने में काम करने वाले किसी मजदूर का हो, मैदानी इलाके के लोगों का हो या पहाड़ी क्षेत्रों के आदिवासियों का, यह कुटिल भूस्वामियों, गैरजिम्मेदार, व्यापारियों एवं उत्पीड़क पुलिस, और कानून की प्रक्रियाओं के जाल से किसी भी तरह आजाद होने का एक सवेतन् निर्विकल्प तरीका था। अतः सबॉल्र्टन विधा के इतिहासकारों के लिए विप्लव या विद्रोह और भारतीय राष्ट्रवाद पर उनके प्रभाव प्रमुख विषय के रुप में दृष्गिोचार हुए है। इसके अतिरिक्त सर्बाल्टन चेतना एवं इसका साथ उस चेतना के विभिन्न तत्व, धर्म, अंधविश्वास, सम्प्रदायवाद, एवं भुक्तभोगी वर्गो द्वारा प्रमखुवर्गी के प्रति दर्शाया गया दृष्टिकोण ऐतिहासिक अध्ययन का एक प्रयोजन हो जाता है।

सर्बाल्र्टन इतिहास लेखन में प्रमुख रुप से डेविड आर्नल्ड, ज्ञान पांडे, अरविन्द दास, दीपेश, चक्रवर्ती, आर.सी. गुआ ने अपने–अपने शोध कार्य से समीक्षा की है एवं इन लोगों के राष्ट्रीय चेतना में अलख जगाने में इनका कितना योगदान रहा है इनकी विश्लेषात्मक समीक्षा की है। रणजीत गुहा अपना प्रतिवाद जताते हुए कहते है कि भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास लेख दो प्रकार से पक्षपातपूर्ण अभिजात्यवाद से ग्रस्त है और वह दोनों सम्मिलित रुप से इस दृष्टिकोण का समर्थन करते है।[7] गुहा का निबन्ध “Forestry and Social Protest in british kumayua” 1893-1921 में दर्शाया है कि कुमाऊँ के वनों में व्यावसायिक दोहन, जिसके विरुद्ध 1973 से चिपको आंदोलन आरम्भ हुआ वस्तुतः 19 वीं सदीं अंतिम दशक में ही प्रारम्भ हो गया था। 20वीं सदीं के तीसरे दशक तक चलता रहा था। दीपेश चक्रवर्ती ने 1890 और 1940 के मध्य कोलकत्ता के जूट मिल कामगारों की दशा का अध्ययन किया है उन्होंने अपने शेध प्रबन्ध में रेखांकित किया कि कैसे अभिजात प्रवृत्ति समाजवादी और साम्यवादी श्रेणियों में घुस गई जिस कारण नेता यूनियनों की अपनी जमीदारी समझने लग गये। इसी क्रम में अरविंद दास यह दर्शाते है कि 1947–48 के दौरान बिहार में कृषि संबंधी परिवर्तनों की अभिजात वर्गी द्वारा प्रवर्तित भूमि सुधरों से सम्बन्ध मानना कितना असंगत है ऊपर से कृषि संबंधी परिवर्तनों के दो मुख्य प्रयास, जो जमीदारी उन्मूलन और भूदान आंदोलन के माध्यम से दृष्टिगोचर हुए। अभिजात्यवर्गीय नहीं थे बल्कि किसानों के असंतोष की अनुक्रियाएँ थे। इनमें से पहला स्वामी सहजानंद सरस्वती ओर सशक्त किसान सभा द्वारा आंदोलन के कई वर्ष बाद हुआ और दूसरा उग्र साम्यवादी नेतृत्व में तेलगांना में कृषक उत्थान के पश्चात् दोनों बिहार के देहाती इलाके में वर्ग संघर्ष को पूर्व निर्देशित करने के उपाय थे। दास कहते है अतः मूलतः अभिजात वर्ग द्वारा निर्देशित प्रयोजित भूमि सुधार के रुप में कृषि सम्बन्धी परिवर्तन की एक व्याख्या सत्व की पकड़ने का प्रयत्न किए बिना परछाई के पीछे भागना है।[8]

गौतम भद्रा ने अपने आलेख 'कोर रीबेल्स ऑफ 1867' में अवलोकन किया है कि 1857 के महाविद्रोह पर इतिहास लेखन की सभी कोटियों ने, चाहे एस.बी.चौधरी के लेखों में व्यक्त राष्ट्रवादी विचारधारा पर आधारित इतिहास हो या प्रमोद सैन गप्ता और कटट्र साम्यवादी दृष्टिकोण के अनुरुप रचित कृतियां हो, उक्त महान घटना को एक अभिजात्यवादी रोमाचंक घटना के रुप में चित्रित किया है।[9]

उत्तर आधुनिकतावाद में मार्क्सवादी एवं अवर या सबॉल्र्टन इतिहास–लेख ऐतिहासिक शोध या पड़ताल को भारतीय समाज के मूल आधारों तक ला रहे है। कामगारों, किसानों, और आदिवायियों के संघर्षो को आलोकित–उद्घाटित करने की व्यग्रता, में सबॉल्र्टन इतिहास–लेख ने न केवल पारम्परिक इतिहास लेख बल्कि मार्क्सवाद दृष्टिकोण लिए भी एक चुनौती पैदा कर दी है।

सबॉल्र्टन इतिहास लेख उन अनगनित लिपिबद्ध विवरणों को अंधेरे और सीलन भरे कमरों में रखी धूल भरी आलमारियों से बाहर निकालकर दुनिया के सामने ला रहा है, जो आस्था और संघर्ष की अनेक कथाआं के साक्षी रहे है।[10] इसने ऐतिहासिक शोध के समक्ष उन प्रश्नों को पुनः खड़ा कर दिया है जिनके बारे में लम्बे समय से विश्वास किया जाता रहा है उनके समाधान ढूंढ लिए गए है। इसने अभिजातवर्गीय ऐतिहासिक बोधकार्य के लिए अब तक अत्यन्त निम्नमनुष्य एवं समूहों को पुनर्स्थापित किया है।[11]

भारतवर्ष में उत्तर आधुनिकोत्तरवाद के समय और आज तक संबॉल्र्टन ऐतिहासिक लेखन के इन क्षत विक्षत अगों को संघर्षो की इन गाथाओं को परस्पर संयोजित किया जा सकता है और मुख्यधारा के इतिहास लेख में पिरोया जा सकता हैं जिससे वह समृद्ध और परिपुष्ट हो सकें।

प्रतिवाद लेखन की आलोचना की जाती है, क्योंकि इसमें व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक दृष्टिकोण सन्निहीत है। अभी भी यह अवधारणा इतिहासकारों के बीच परीक्षणकाल के दौर से गुजर रही है। इतिहास में जब भी कभी भी नई अवधारण प्रस्फुटित होती है तो उसे स्वीकोक्ति के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता रहती है।

***Associate Professor,**
****Assistant Professor**
Department of History,
Govt Arts College, Dausa

संदर्भ (References)

1. Butterfield, 'Historiography', in Dictionary of history of ideas. Vol. 02, 464.
2. Gare, post modernism and environmental crisis. 4
3. Ibid. 1-2
4. Subaltern studies I: writing on south Asian history and society (Delhi, 1982) 3
5. Evans, in defence of history, 126
6. Ibid- 248-49
7. Guha-preface to subaltern studies-Vol-2
8. Ranjeet Guda-Subaltern Studies Vol-1-3
9. Das.' Agrarian change from above and below: Bihar, 1947-78 in Guha ed; subaltern studies, Vol-2,227
10. Kosmbi, Introduction to the study of Indian history, 166
11. Thapar, ancient Indian social History.